



नेताजी का चश्मा





स्वयं प्रकाश

लेखक परिचय

साहित्यकार **स्वयं प्रकाश** का जन्म 20 जनवरी सन् 1947 को मध्य प्रदेश के इंदौर नामक शहर में हुआ था । सशक्त उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुके स्वयं प्रकाश जी आजकल भोपाल में साहित्य – लेखन में व्यस्त हैं, तथा 'वसुधा' नामक पत्रिका के संपादन से सम्बद्ध हैं ।

साहित्यिक परिचय

अब तक स्वयं प्रकाश जी के तेरह कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं-

कहानी संग्रह 'सूरज कब निकलेगा', 'आएँगे अच्छे दिन भी' तथा 'आदमी जात का आदमी'।

उपन्यास 'विनय और ईधन'।

इनकी कुछ कहानियों का रूसी भाषा में अनुवाद भी हुआ है। वर्ष 2011 में इन्हें प्रतिष्ठित 'आनन्द सागर कथाक्रम सम्मान' से सम्मानित किया गया। राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा भी इन्हें 'रांगेय राघव पुरस्कार', 'पहल सम्मान', 'बनमाली' पुरस्कार' आदि से नवाजा गया।

इनके लेखन में वर्ग शोषण के विरुद्ध चेतना की गूँज सुनाई पड़ती है।

चरित्र चित्रण

पानवाला

पानवाला एक खुशमिज़ाज व्यक्ति था । मोहल्ले में होने वाली हर गतिविधि पर वह नज़र रखता था । जब वह हँसता था तो उससे पहले उसकी तोंद हिलती दिखाई देती थी । लगातार पान खाने के कारण उसकी लाल-काली बत्तीसी दिखाई देती थी । चश्मा विहीन नेताजी की मूर्ति उसके लिए मनोरंजन का साधन था । कैप्टन चश्मे वाले की हरकतों को वह पागलपन कहता है । वह यह टिप्पणी करता है कि – “ लंगड़ा क्या जाएगा फौज में , पागल है पागल । यह टिप्पणी उसकी हीन मानसिकता का परिचायक है ।

कैप्टन तो शारीरिक रूप से अपाहिज था ,पर पानवाला व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों ही क्षेत्र में अपाहिज है । पानवाले जैसे लोग ही आजकल उन्हें पागल कहते हैं जो निःस्वार्थ भाव से हानि-लाभ की परवाह किए बगैर कल्याण का कार्य करते हैं । ऐसे लोग देश की प्रगति में बाधक होते हैं । ये देशभक्तों का मज़ाक उड़ाते हैं क्योंकि इनके मन में देशभक्ति का अभाव होता है । अतः यह भी कहा जा सकता है कि पान वाले की संवेदना पूरी तरह मरी नहीं हैं । कैप्टन के निधन पर भी वह भावुक हो जाता है ।

कैप्टन

- कैप्टन था तो एक साधारण चश्मा बेचनेवाला पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए वह एक देशभक्त भी था । क्रांतिकारियों और शहीदों की इज्जत करता था । इसलिए जब उसने देखा कि किसी भी कारणवश चौराहे पर स्थापित नेताजी की संगमरमर की मूर्ति चश्मा विहिन है अधूरी है वह अपने चश्मों में से जो भी चश्मा मूर्ति पर फीट बैठता उसे पहना देता ।

इस प्रकार अपनी क्षमता के अनुरूप देश की मान मर्यादा की रक्षा में अपना योगदान देता था । वास्तव में सेनानी न होते हुए भी वह किसी कैप्टन से कम नहीं था । उसके मन में नेताजी जैसे फौजी के प्रति श्रद्धा की भावना थी । नेताजी ने आज़ाद हिन्द फौज की स्थापना की थी जिसके वे ही कैप्टन थे । नेताजी की मूर्ति को चश्मेवाला रोज़ चश्मा पहनाकर एक कैप्टन का काम करता था ।



मुख्य बिंदु

- हालदार साहब को हर पन्द्रहवें दिन कम्पनी के काम के सिलसिले में एक छोटे से कस्बे से गुज़रना पड़ता था।
- कस्बे की नगरपालिका ने एक बार शहर के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेता जी सुभाषचन्द्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी।
- लगता है कि अच्छी मूर्ति की लागत अनुमान और उपलब्ध बजट से कहीं बहुत ज़्यादा होने के

कारण काफी समय ऊहापोह और चिट्ठी-पत्री में बरबाद हुआ होगा और बोर्ड की शासनावधि समाप्त होने की घड़ियों में किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय किया गया होगा।

दिल्ली चलो तुम मुझे खून दो



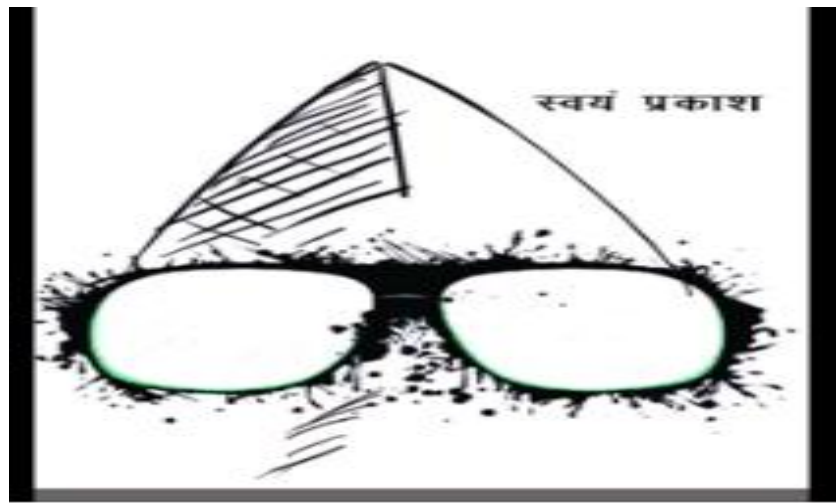
- टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची मूर्ति बनाने का काम कस्बे के इकलौते हाईस्कूल के डॉइंग मास्टर मोतीलाल को सौंपा गया।
- मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो' वगैरह याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह एक सफल एवं सराहनीय प्रयास था।
- एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था। हालदार साहब को यह देखकर कौतुक हुआ।
- दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुज़रे तो उन्होंने मूर्ति पर चश्मा बदला हुआ देखा। हालदार साहब का कौतुक और बढ़ा। वाह भई, क्या आइडिया है ! मूर्ति कपड़े नहीं बदल सकती लेकिन चश्मा तो बदल सकती है।



- आखिर एक बार उत्सुकतावश उन्होंने पानवाले से पूछ ही लिया, “क्यों भई ! क्या बात है? यह तुम्हारे नेता जी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है?”
- पानवाले ने पीछे घूमकर दुकान के नीचे पान थूका और अपनी लाल-काली बत्तीसी दिखाकर बोला, “कैप्टन चश्मेवाला करता है।”
- हालदार साहब के यह पूछने पर कि वह बार-बार मूर्ति का चश्मा क्यों बदलता है, पानवाले ने बताया, “कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किदर से लाएगा? तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बिठा दिया।”
- अब हालदार साहब को समझ में आया कि एक चश्मेवाला है जिसका नाम ‘कैप्टन’ है। उसे नेता जी की बिना चश्मेवाली मूर्ति बुरी लगती है बल्कि आहत करती है, मानो चश्मे के बिना नेता जी को असुविधा हो रही हो, इसलिए वह उसे चश्मा पहनाता तथा बदलता है।

- नेता जी के यह पूछने पर कि क्या वह कैप्टन चश्मेवाला नेता जी का साथी है या आज़ाद हिन्द फ़ौज़ का भूतपूर्व सिपाही, पानवाले ने कहा, “नहीं साब ! वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज़ में ? पागल है पागल ! वो देखो, वो आ रहा है। आप उसी से बात कर लो। फ़ोटो-वोटो छपवा दो उसका कहीं।”
- हालदार साहब ने देखा, एक बेहद बूढ़ा मरियल-सा लँगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे में एक बाँस पर टँगे बहुत से चश्मे लिए एक गली से निकला और एक बन्द दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था। उसके पास दुकान भी नहीं थी।
- हालदार साहब उसके बारे में और भी बातें पूछना चाहते थे लेकिन समय की कमी के कारण नहीं पूछ सके।
- फिर एक बार ऐसा हुआ कि मूर्ति के चेहरे पर कोई भी, कैसा भी चश्मा नहीं था। उस दिन पान की दुकान भी बन्द थी।

- अगली बार भी मूर्ति की आँखों पर चश्मा न देखकर उन्होंने पानवाले से इसका कारण पूछा। पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला, 'साहब, कैप्टन मर गया।'
- हालदार साहब को बहुत दुःख हुआ। वह बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी, जवानी-जिंदगी सब कुछ होम कर देने वालों पर भी हँसती है और अपनी लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।



- अगली बार उधर से निकलते समय उन्होंने चौराहे पर पान की दुकान पर न रुकने, न पान खाने और न ही उस मूर्ति की ओर देखने का निश्चय किया।
- लेकिन आदत से मजबूर आँखें उस ओर आते ही मूर्ति की ओर उठ गईं। उन्होंने देखा कि मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था जैसा बच्चे बना लेते हैं। भावुक होने के कारण हालदार साहब की आँखें भर आईं।

कहानी का संदेश

इस कहानी द्वारा लेखन यह बतलाना चाहता है कि कुछ भू-भागों तथा निश्चित सीमाओं से घिरा कोई नाम ही देश नहीं होता बल्कि देश बनता है वहाँ के रहने वाले नागरिकों से । उन नागरिकों का अपने देशवासियों, नदियों, पहाड़ों पेड़ – पौधों, वनस्पतियों, पशु-पक्षियों आदि से प्रेम करना तथा उनकी समृद्धि में योगदान देना ही देशभक्ति कहलाता है ।

कहानी में कैप्टन चश्मे वाले के माध्यम से लेखक ने यह संदेश देना चाहा है कि किस प्रकार देश की मान – मर्यादा की सुरक्षा तथा विकास में प्रत्येक नागरिक अपना योगदान दे सकता है । चाहे वह साधारण से साधारण आदमी हो, चाहे बच्चा हो या बूढ़ा ,सभी अपने – अपने तरीके से देश की सेवा कर सकते हैं ।

शीर्षक की सार्थकता

जिज्ञासा से भरा यह शीर्षक बिल्कुल सार्थक है । जिज्ञासा इस बात की आखिरकार अभी तक तो यही सुनने को मिलता रहा कि नेताजी ज़िंदाबाद है (कुछ साल पहले यह खबर बीच-बीच में अखबारों में आ जाती थी ।) अब चश्मे को क्या हो गया । कहानी का शीर्षक उसके उद्देश्य की पूर्ति करता है । कहानी में चश्मा ही चर्चा का विषय है और अंत भी नेताजी की मूर्ति के चश्मे से ही होता है । चश्मे के माध्यम से देशभक्ति की भावना को उजागर किया गया है । कोई भी काम छोटा या बड़ा उसके पीछे छिपी भावना से होता है ।